



वृक्षारोपण और संवर्धन-एक अति क्र० ४७ आवश्यक कार्य



मनुष्य के जीवन धारण और उत्कर्ष में जिन अन्य जीवधारियों का प्रमुख सहयोग है, उनमें पशु और वृक्ष वर्ग की गणना प्रमुख है। गौमाता के गुण गाते-गाते हम नहीं अघाते, क्योंकि उसके द्वारा प्राप्त होने वाले दूध, गोबर, बैल, चर्म आदि सभी उपकरणों द्वारा पौष्टिक आहार तथा दूसरी सुविधाओं की प्राप्ति होती है। ठीक ऐसा ही अनुदान वृक्षों से प्राप्त होता है। उनके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों की गणना नहीं। वे बोलते भर नहीं, जीव तो उनमें भी है और वह जीव भी ऐसा है जो सन्तों जैसी गरिमा रोम-रोम में भरे बैठा है। वृक्ष यदि संसार में न होते तो सम्भवतः हमारे लिये जीवित रहना ही सम्भव न हुआ होता। घासपात और वनस्पतियों की महिमा तो लोग पशुओं के आहार, औषधि, अन्न तथा रस्सी, फूस आदि के रूप में जानते हैं, पर वृक्षों की उपयोगिता की कम ही जानकारी लोगों के ध्यान में आई है।

आमतौर से इतना ही जाना जाता है कि वृक्षों की छाया या फल फूल काम में आते हैं। हमें यह भी जानना चाहिए कि मनुष्य की साँस से निकलने वाली विषैली कार्बन गैस को सोख कर निरन्तर वायु को शुद्ध करने रहने का श्रेय वृक्षों को ही है, वे दिन भर यही काम करते हैं। रात को वे थोड़ी कार्बन गैस निकालते तो हैं, पर वह मनुष्य शरीर से निकलने वाली विष-वायु जैसी हानिकारक नहीं होती। दिन भर वृक्ष 'आक्सीजन' नामक प्राण वायु उगलते हैं। मनुष्य के लिए यही जीवनाधार है। ऐसा बहुमूल्य आहार जिसकी पल-पल पर जरूरत पड़ती है और जो रक्त में लालिमा से लेकर जीवन धारक अनेक साधन जुटाता है, वृक्ष ही देते रहते हैं। वृक्ष न हों तो



आक्सीजन की सारे संसार में कमी पड़ जाय और शरीरों से तथा आग जलने से निकलने वाली विष वायु सारे आकाश को दूषित कर ऐसी घुटन पैदा करदे कि प्राणियों का जीवन धारण ही सम्भव न रहे । इस दृष्टि से उन्हें जीवन दाता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी ।

वृक्षों में एक ऐसा विशिष्ट आकर्षण है जो बादलों को खींच कर लाता है और वर्षा की परिस्थितियाँ पैदा करता है । जहाँ वृक्ष अधिक होते हैं वहाँ वर्षा भी अधिक होती है । वृक्ष रहित प्रदेश में स्वयंभेय वर्षा की कमी हो जाती है । वृक्षों की अभिवृद्धि अपने सुख-साधनों को बढ़ाना है । उनमें कमी आना अपनी ही आवश्यकताओं की पूर्ति कर कुठाराघात होना है । प्राण-वायु कम मिले, वर्षा कम हो और वनस्पतियाँ कम उगें तो हम कितने घाटे में रहेंगे, इसका लेखा-जोखा रख सकना कठिन है ।

आँखों पर हरीतिमा का बड़ा शान्तिदायक प्रभाव पड़ता है । उससे सहज ही जी प्रसन्न हो उठता है । घास तो वर्षा के दिनों में ही शोभा देती है, पर वृक्ष तो साल भर अपनी शीतलता प्रदान करते रहते हैं । उनकी छाया में कितने मनुष्य और पशु-पक्षी विश्राम पाते हैं, यह देखते हुए उन्हें एक खुली धर्मशाला कहा जा सकता है । फूलों की शोभा देखते ही बनती है । उनकी सुगन्ध मस्तिष्क में प्रफुल्लता और शक्ति का संचार करती है । फलों में ही वे जीवन-तत्व हैं जो मनुष्य को निरोग और दीर्घजीवी बना सकते हैं । अन्न-आहार तो मजबूरी और अभाव की परिस्थिति में स्वीकार करना पड़ा है, अन्यथा मनुष्य की शरीर रचना बन्दर जैसे फलाहारी-वर्ग में ही आती है । उसका प्राकृतिक और स्वाभाविक भोजन फल है । देह में जो-जो जीवन तत्व पाये जाते हैं और जिनकी निरन्तर आवश्यकता रहती है वे अधिकतर फलों में ही भरे रहते हैं । इसलिये पूर्ण समर्थ, पौष्टिक, स्वादिष्ट और स्वास्थ्य रक्षक आहार में फलों की ही गणना की जाती है । उनमें शरीर ही नहीं मस्तिष्क और स्वभाव को भी उच्च स्तरीय पोषण प्रदान करने की क्षमता है । इसलिये धार्मिक दृष्टि से फलों को बहुत प्रधानता दी गई है । देवता पर चढ़ाने में फल और उपवास में फल सर्वत्र उन्हीं की गरिमा फैली पड़ी है । चिकित्सक भी



रोगियों को फलों का आहार बनाते हैं। क्योंकि वे शीघ्र पचने वाले, पेट पर बोझ न डालने वाले और जीवन तबों से भरपूर रहते हैं, रोगों से लड़ने की क्षमता पैदा करते हैं। ऋषि मुनियों का प्रधान आहार फल ही था। वन्य प्रदेशों में वे फल वाले वृक्षों का रोपण करके आहार समस्या से निश्चिन्त हो जाते थे। इसमें जहाँ सुगमता थी वहाँ दीर्घ, सुदृढ़, स्वास्थ्य, बुद्धि में सात्विकता तथा मनोबल बढ़ने जैसे अगणित लाभ थे।

वृक्षों की इस उपयोगिता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित होना ही चाहिए और उत्साहपूर्वक वृक्षों का आरोपण, संवर्धन, संरक्षण किया जाता है। कीमती फलों वाले वृक्ष आमदनी भी मामूली खेती से कहीं अधिक दे सकते हैं। सन्तरा, मौसम्बी, नींबू, चीकू, सेव, नाश्पाती, अमरूद, लीची, लुकाट, आड़ू, अनन्नास, शहतूत, अंजीर जैसे फल आसानी से उगाये जा सकते हैं। तीन-चार वर्ष उनकी रखवाली, सिंचाई आदि का प्रबन्ध कर लिया जाय तो आगे फिर उनके लिये कुछ अधिक नहीं करना पड़ता है। आम, जामुन, खिरनी, महुआ, कटहल, आंवला, गुलर, पीपल, जैसे वृक्ष एक बार लगे तो सदा के लिए निश्चिन्तता हो गई। अंगूर, केले, पपीते जैसे सामान्य फलों को तो खेल-खेल में ही थोड़ी सी जगह में उगाया जा सकता है और हरियाली की शोभा के साथ-साथ बहुमूल्य आहार भी प्राप्त किया जा सकता है।

दुर्भाग्य से अपने देश में वृक्षारोपण के लाभों की तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जबकि पुर्विकसित देशों में उनके संवर्धन के लिए हर नागरिक में पूरा उत्साह पाया जाता है। पशुओं से भी अधिक उपयोगी वृक्षों को उगाने और बढ़ाने में जहां विशाल योजनाएँ बनती रहती हैं वहाँ अपने देश में इनको काट-काट कर समाप्त करते हुए "गौहत्या" जैसे कुकृत्य में हम लगे हुए हैं। कृषि के लोभ में वृक्षों का सफाया हो चला और खेतों की मेंडों में जहाँ कभी पेड़ों की हरीतिमा छाई रहती थी और उन पर चढ़ कर बच्चे बढ़िया मनोरंजन, व्यायाम करते थे वहाँ अब सर्वत्र सुनसान ही दिखाई पड़ता है। लोग सोचते यह हैं कि इससे जमीन खेती के लिये निकल आयेगी, पर वे यह भूल जाते हैं कि वृक्षों के अभाव में वर्षा की कमी तथा सर्दी-गर्मी की मात्रा



अधिक हो जाने से फसलों को जो नुकसान होगा वह पेड़ों द्वारा छोड़ी हुई जमीन की अपेक्षा अधिक हानिकारक सिद्ध होगा ।

हमें जहाँ भी सुविधा हो वृक्ष लगाने और उनकी रक्षा का प्रयत्न करना चाहिए । धर्म-शास्त्रों में वृक्ष लगाने का पुण्य बहुत माना गया है । पीपल, बरगद, आंवला जैसे वृक्षों की तो पूजा भी होती है । बिहार के हजारों बाग जिले में आमों के हजार-बगीचे लोगों ने पुण्य-प्रवृत्ति से प्रेरित होकर ही लगाये थे । लोकोपयोगी हर कार्य धर्म पुण्य की गणना में आता है ।

अपने देश में लोग गोबर जैसी बहुमूल्य खाद को जलाऊ लकड़ी की जगह काम में लाते हैं । यदि हम बेकार और हलकी भूमि में जलाऊ लकड़ी वाले वृक्ष लगा दें तो ईंधन की समस्या हल हो सकती है और मजबूरी में जो कीमती गोबर खाद नष्ट हो जाती है उसे बचाकर उत्पादन की दृष्टि से प्रयोजन पूरा किया जा सकता है । इमारती लकड़ी अपने यहाँ कितनी कम होती जा रही है उसका अनुभव उसकी दिन-दिन बढ़ती जा रही कीमतों को देख तब किया जा सकता है जब इमारत या फर्नीचर की लकड़ी या उससे बनी वस्तुयें खरीदनी पड़ती हैं । लकड़ी की ज़रूरत बात-बात में पड़ती है । वृक्षारोपण के अभाव में वह इतनी महंगी होती चली जाय कि सर्वसाधारण को उसका खरीदना कठिन पड़े तो इसे एक दुर्भाग्य ही माना जायगा ।

इस आवश्यकता को समझा ही जाना चाहिए कि वृक्ष मनुष्य की एक महती आवश्यकता है और उनकी अभिवृद्धि के लिये नया उत्साह और नई चेतना पैदा की जानी चाहिये । रास्ते के किनारे हर जगह वृक्ष लगाये जाने चाहिए ताकि पथिकों को सरलता और बिना थकान के यात्रा करने का अवसर मिलता रहे । जहाँ भी अवसर हो हमें फनदार अथवा जलाऊ या इमारती लकड़ी वाले वृक्षों को लगाने के लिए स्वयं आगे बढ़ना चाहिए और दूसरों को प्रोत्साहन देना चाहिए ।

‘वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य’ पुस्तिका से ।

युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा ।